शोध सारांश

"अनदेखे अनजान पुल (उपन्यास) में स्त्री-सौंदर्य के आयाम" पर शोध करते हुए मैं कई बार 'निन्नी' की आत्मयातना की स्वानुभूति तो नहीं,पर सहानुभूति जरूर महसूस किया। शोध करते हुए उनकी पीड़ा को मैं निकट से अनुभव किया हूँ। लगा, यही कहीं से 'निन्नी'मुझे पुकार रही हो कि मेरी गलती क्या है ? मुझसे, इस तरह से व्यवहार क्यों किया जाता है ? मैंने तो किसी का कुछ भी नहीं बिगाड़ा है। मैंने तो कभी किसी का अहित भी नहीं सोचा, न ही किया। फिर मुझसे इस से तरह नफरत क्यों करते है, लोग ? मैं काली दिखती हूँ। कुरूप दिखती हूँ। तो इसमें मेरा क्या क़ुसूर है?

बिना गलती की सजा दी जा रही है। वह भी सजा देने के बाद लोगों को जेल में रखा जाता है। मुझे तो इसी समाज में रख कर बार-बार मानसिक रूप से प्रताड़ित किया जाता है। मैं पढ़ी-लिखी हूँ, सभ्य हूँ, सामाजिक दायित्व भी निभा सकती हूँ। फिर भी, मुझे हेय दृष्टि से देखा जाता है, क्यों ? मेरी गलती क्या है ?

वह बार-बार अपमानित हो कर जब आपने आप से प्रश्न करती है। प्रश्न का उत्तर नहीं मिलने पर वह कई बार अपने आप से विद्रोह कर बैठती है। पर समाज में उसे सुनने-समझने वाला है, कौन? उससे किसी को बात तक करना गबारा नहीं है। फिर भी 'निन्नी' जी रही है। क्योंकि अपने आपको खत्म करने के लिए उसके पास हिम्मत नहीं है। पूरी जीवन यह ढूंढते हुए बीत जाती है कि सुंदरता के पैमाने क्या है ? जो काली या कुरूप हो, उसे समाज में सम्मान के साथ जीने का कोई अधिकार नहीं है, क्या ?

निन्नी जैसी सभ्य,उच्च शिक्षित स्त्रियाँ जो गोरी न हो या यों कहें कि कुरूप दिखती हो। उन्हें समाज में सभ्य क्यों नहीं माना जाता है ? उन्हें समाज में सम्मान क्यों नहीं मिलता हैं ? इसी प्रश्न का जवाब तलाशने के लिए मैंने इस शोध विषय पर गहनता से अध्ययन करते हुए विचार किया है। विचार-विमर्श के दौरान मैंने प्रस्तुत शोध विषय को तीन अध्यायों में बांटा है।

पहले अध्याय में मैंने सौंदर्य संबंधी भारतीय दृष्टिकोण और पाश्चात्य अवधारणा को ऐतिहासिक संदर्भों को देखते हुए 'अनदेखे अनजाने पुल' के मूल प्रश्न पर चर्चा की है। उपन्यास की नायिका 'निन्नी' के साथ घट रही मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, भौतिक यतनाओं के रेशों को खोजने का प्रयास किया है। सौंदर्य को परिभाषित करने वाले भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों की सौंदर्य के प्रति दृष्टिकोण को उल्लेखित किया हैं।

दूसरे अध्याय में मैंने 'अनदेखे अनजान पुल' और सौंदर्य के आयाम पर चर्चा की है। हिंदी उपन्यास की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और सौंदर्य की अवधारणा का संक्षिप्त परिचय देते हुए 'अनदेखे अनजान पुल' के मूल प्रश्न से जोड़ा है। समाज के बुद्धिजीवियों पर प्रश्न करते हुए इस सवाल का जबाव ढूँढने का प्रयास किया है कि इसके लिए जिम्मेदार कौन हैं ?

तीसरे अध्याय में मैंने सुन्दर-असुन्दर का द्वंद और अनदेखे अनजाने पुल पर चिन्तन किया है। इसके साथ ही अनदेखे अनजान पुल में स्त्री और पितृसत्ता के अन्तः संबंध पर गहराई से चर्चा की है।

कुल मिलाकर, इस शोध में 'निन्नी' जैसी लाखों स्त्रियों को समाज के द्वारा मिल रही आत्मयातना,आत्मपीड़ा और 'बिना किये की सजा' को मूल प्रश्न के रूप में उद्घाटित किया गया है।